PART (8) 19/3/2014

(8)

बीर सिंह बोध

धर्मदास वचन

धर्मदास पूछे ध्यान लगाये । साहिब आप मुझे समझाये ।
राजा वीर क्यूँ करते सेवा । करके दया बताओ देवा ।
वीर सिंह देव बड़ा अभिमानी । क्यूँ करता सेवा आपकी स्वामी ।
कथा वही आप बताये । दया कर प्रभु मुझे सुनाये ।

कबीर वचन

धर्मदास भली पूछे बात । तुमसे कहूँ मैं सब विख्यात ।
तन मन धन जो मोह भुलाते । जीव वो संग मेरे जाते ।
आदि अन्त का ध्यान लगाये । हम तभी धरा पर आये ।
और दिशा हम देखे जाके । पूरब पश्चिम दिशा भी ताके ।
वीर सिंह का काशी धाम । हम गये राजा को देने ज्ञान ।
प्रथम भक्त घर हम जाते । सकल संत जहाँ ध्यान लगाते ।
नामदेव भक्ति में मन को लगाता । धनाजाट सेन वहाँ पे आता ।
पद्मावती वहाँ दीप जलाये । सारे भक्त वहाँ विनती गाये ।
नामदेव भजन प्यारे गाते । हाथ ताल रैदास बजाते ।
धना मृदंग पटट उजियारा । मिले भक्त सब संत अपारा ।
धर्मदास वहाँ हम भी जाते । राम राम सब मिलके गाते ।
एक वचन हम सबसे बोले । जिसे सुन मन सबके डोले ।
नामदेव किस पुरुष को ध्याते । भजन कीर्तन किसका गाते ।

नामदेव वचन

~~नामदेव मूख~~

नामदेव कहे क्यूँ मूर्ख बनाते । दूजा पुरुष तुम किसे बताते ।
हरि हर ब्रह्मा सबके देवा । जिनकी करता सकल जग सेवा ।
जगत कर्ता जग के स्वामी । वेद शास्त्र सुनाये महिमा वाणी ।
ज्ञानी आदि अन्त किसे बताते । शीश मुड़ाय किसको ध्याते ।

कबीर वचन -

हरि ब्रह्मा शिव शक्ति भवानी । बताओ इनकी जन्म कहानी ।
बिना ज्ञान सब बनते ज्ञानी । जिससे करे काल जीव की हानी ।
अजर अमर पुरुष का धाम । द्वैत पंथ चलाये त्रिभगवान ।
भक्त मर्म ना इसका जानें । मोह माया में रहे भूलाने ।
हम तो अगम देश से आये । सत्यनाम सौदा हम तो लाये । 26

दोहा :- सतनाम शब्द भेदिया, वह तो पुरुष अपार ।
त्रिलोक जानि ना पुरुषको, देख सके ना संसार ।

चौपाई

वीर सिंह बघेल महाराज । महल छत पर बैठे आज ।
राजा नजर सब पर रखते । भाव भक्ति जाँच वो करते ।
गाते भक्त आनन्द वातहारा । एक भक्त रहे सबसे न्यारा ।
टोपी एक सुन्दर पहने । मस्तक सिन्दुरी टीका कीन्हे ।
स्वेत स्वरुप भगत की काया । भगत छवि रहे पुरुष की छाया ।

राजावीर वचन

सिपाही राजा शीघ्र बुलाता । नामदेव को लाने का हुक्म सुनाता ।

छड़ीदार वचन

शीघ्र सिपाही वहां से जाते ।
सिपाही शीघ्र वहां से जाते । नाम देव को बुलाकर लाते ।

नाम देव वचन

नामदेव रहे जोड़ अपने हाथ । और कौन है राजा साथ ।
छड़ीदार ने उसे बताया । अकेले राजा ने तुम्हे बुलाया ।
नामदेव अपनी छड़ी उठाते । शीघ्र राजा सम्मुख जाते ।
राजा देखके हर्ष मनाया । आदर सहित पास उसे बिठाया ।

राजा वचन

राजा कहे मुझे बताओ देवा । करते तुम वहाँ किसकी सेवा ।

नामदेव वचन

दोहा :- भक्ति करते गोविंद की, लगाकर हम सब ध्यान ।
श्वेत रूप जो भक्त है, बैठे क्यूँ वहाँ अन्जान ।

नामदेव वचन

राजा एक बात तुम्हें बताते । हरि हर ब्रह्मा से सब ध्यान लगाते ।
भक्ति ना वो इनकी करता । किसी पुरुष का नाम वो जपता ।
माला मेखली व श्याम शरीर । जाति जुलाहा व नाम कबीर ।
देव कीर्तन जब करते सारे । अचम्भित होकर हमें निहारें ।
पत्थर काटके मूरत बनती । क्यूँ करते सब उनकी भक्ती ।
काँस्य मूर्ति सभी बनाये । उसमे कैसे ब्रह्म समाये ।
झूठे देव हर कोई मनाता । ऐसे कुवचन कबीर सुनाता ।
वह तो कहे हम पुरुष का रूप । नहीं जाने ~~कोई~~ मेरा कोई स्वरूप ।
योग प्रभाव और भक्ति ज्ञान । तीरथ व्रत और सब भगवान ।
सबको काल जाल बताये । किसी से ना ~~क~~ निज ध्यान लगाये ।
हम किये बहु विधि वाद विवाद । नहीं माने वो अनहद नाद ।

दोहा :- जुलाहा निन्दक सभी का, पूजे ना भगवान ।
असत्य कहे त्रिनाथ को, करता निरगुण ध्यान ।

राजा वीर सिंह वचन

राजा नामदेव से बोले वाणी । अगम ज्ञान वो बताता ज्ञानी ।

नामदेव वचन

कहे नामदेव सुनो हे राजन । बहुविधि कहे शब्द वह पावन ।
जो भी निर्गुण नाम को ध्याता । योनि संकट ना उसको आता ।
राजा हरीदार एक पठाये । सम्मुख अपने कबीर बुलाये ।

राजवीर सिंह वचन

परम खुशी मन मेरा भाता | जो कोई निर्गुण नाम सुनाता |
स्तुति वेद करते जिसकी | पार ना पाते हरि हर इसकी |
निर्गुण नाम को जो भी ध्याता | जीव वही पूर्ण कहलाता |
नाम देव सुनो संत सुजान | वह निंदक नहीं संत प्रमान |
हड़ीदार भेज तुरंत बुलवाओ | निर्गुण भेद अभी खुलवाओ |
रूप संत का मुझको भाता | शांत रूप वो नाम को ध्याता |
देखो अभी वो यहाँ पर आता | सबको निर्गुण नाम सुनाता |
हड़ीदार समीप मेरे आये | निज आसन हम जहाँ लगाये |

दोहा

हड़ीदार वचन

हड़ीदार तब विनय सुनाये | कबीर राजा तुम्हें बुलाये |
राजा किये विनय जोड़ के हाथ | शीघ्र चलो ~~कबीर मेरे साथ~~ | कबीराये

कबीर वचन

सुनके कबीर संशय लोते | किस कारण राजा मुझे बुलाते |
ना हम पंडित ना हम ज्ञानी | ना ठाकुर ना कोई स्वामी |
ना हम बिराना देश बसाते | ना हम नाटक कोई दिखाते |
धन दौलत ना संग हमारे | किसलिये राजा मुझे पुकारे |
गरज हो तो यहाँ चले आये | हम तो बैठे भजन कराये |

दोहा :- हड़ीदार तुम जाय के, कहो राजा के पास |
महा प्रचण्ड बघेलवा, हम नहीं मानि त्रास |

चौ०

हड़ीदार अति क्रोध मनाता | तुरंत राजा के सम्मुख जाता |

हड़ीदार वचन

हड़ीदार जोड़कर अपने हाथ | राजा को बताये सारी बात |
मेरे बुलाये भक्त ना आता | भय आपका ना उसे सताता |
कहे राजा को क्या हमसे काम | समझता आपको तृण समान |
हड़ीदार वचन जो राजा सुनता | भेद बात का वो समझता |

परम पुरुष भक्त बन आये । आये नहीं जो हम बुलाये ।
मान बड़ाई लोभ भुलाता । सत्य भाव मन उसके आता ।
निर्गुण भक्ति रहे जो लीन । हृदय रखता ना भाव मलीन ।
आशा तृष्णा घट जिसके बसते । धनवान से मिलन को तरसते ।
अटल संत ये अति महान । किस कारण आये हमारे धाम ।
सोच राजा मन में करते । नामदेव ना जिसे समझते ।
मान बड़ाई की जिसका आस । दौड़ के आये राजा पास ।

दोहा :- नामदेव राजा से कहें, आवे ना यहाँ कबीर ।
है अभिमानी बहुत वो, करे गुमान गम्भीर ।

चौपाई

वीर सिंह राजा रखते धीर । हम जायें जो ना आये कबीर ।
वह तो सत्य भक्ति चित दीन्हा । कारण कौन जो त्रास ना कीन्हा ।
यहि विधि राजा विवेक विचारे । तब ही राजा आप सिधारे ।
देखे हम राजा को आते । तब हम लीला एक रचाते ।
आसन धरा से ऊँचा उठाया । सवा हाथ ऊपर उसे बनाया ।
माथा तिलक और टोप विराजे । हाथ श्वेत कुँवरी से साजे ।
अचरज राजा देख मनाते । नजर ये सत्पुरुष से आते ।
देखा हमने जगत ये सारा । ऐसा पुरुष ना कभी निहारा ।
धन्य धन्य स्तुति सारे गाते । धन्य कबीर चरण सब ध्याते ।
राजा साहिब चरण पकड़ते । गुणगान बहुत हमारा करते ।
धन्य भाग्य जो हमने पाया । साहिब दर्श हमें अति सुहाया ।

राजा वीर सिंह वचन

छन्द / दोहा :- साहिब स्तुति नृप करें, कहे ब्रह्म निर्गुण नाथ ।
अनाथ का सनाथ करें, रखके मस्तक हाथ ।
साहिब दरश दीजिये, दास मुझको अपना जान ।
कृपा करिये दास पर, चलिये हमारे धाम ।

सोरठा / दोहा :-

कबीर वचन

घर तुम्हारे क्या मेरा काम । बघेल राजा तुम अति महान ।
काम क्रोध मद लोभ बड़ाई । रोम रोम अभिमान समाई ।
सवा लाख मंत्री तुम्हारे साथ । दो लाख प्यादों के तुम नाथ ।
हजार हाथी संग आते जाते । कामिनी संग दिनरात बिताते ।
कंचन कलश महल अटारी । कैसे शब्द जपे नर नारी ।
हम भिक्षुक जग जाने सारा । कौन काम है वहाँ हमारा ।

राजा वीर सिंह वचन

तुम सतगुरु हो दीन दयाल । हुये करम वश हम बेहाल ।
माया अन्धेरा नैन हमारे । पावन दर्श अब मिले तुम्हारे ।
~~मेरा दया अपना कर लीजो~~
दया कर अपना हमें बनाये । दास जानके आदेश सुनाये ।
दीन जान घर मेरे आना । भक्तराज विनती ना भुलाना ।
पापी अधम मैं कहलाता । बिन कृपा काल हमे सताता ।
दे उपदेश प्रभु मुझे बचाओ । पाप जाल से शीघ्र छुड़ाओ ।
मुझपर अपनी कृपा दिखाना । प्रभु भवपार हमें लगाना ।

दोहा:- दीनों के दातार आप हो, करिये मुझे सनाथ ।
मैं आधीन प्रभु आपके, चलिये हमारे साथ ।

चौपाई

अधीन देखके नृप को द्वार । घर जाने का किया विचार ।
~~तत्पश्चात राजा हाथी मंगाये ।~~
तभी राजा ने हाथी मंगाया । हाथी के ऊपर हमें बिठाया ।
गज से आसन ऊँचा रहता । चले राजा तो नगाड़ा बजता ।
राजा संग महल उसके जाते । रानी को तुरंत वहाँ बुलाते ।
मानिक रानी वहाँ पर आये । राजा बात अपनी उसे बताये ।

राजा वीर सिंह वचन

हम रानी गुरु किये कबीर । आदि ब्रह्म है मति के धीर ।
चरण धोय चरणामृत लीजे । सतगुरु दया कर्म मिटा दीजे ।

रानी मानिक देवी वचन

राजा विनती सुनो हमारी । समझ बूझ ~~कर~~ गुरु करो तितकारी ।
~~तुम राजा हो~~
तुम राजा बहुत विद्वान । विनय हमारी लो तुम मान ।

राजा वीर सिंह वचन

सुनकर वचन वो मुस्कुराये । रानी ज्ञान कौन समझाये ।
~~तुम नारि भक्ति क्या मानो~~
तुम नारि क्या भक्ति मानो । साहिब गति नहीं तुम जानो ।
कर्ता आप देह धर आये । भक्तरूप दर्श हमें कराये ।
भोजन को हम दोऊ बिठाये । दो भोज थाल वहाँ मंगाये ।
कंचन थाल लोटा पानी । अनेक व्यंजन लाई रानी ।
थाल अधर पृथ्वी से रहता । राजा आश प्रसाद की रखता ।
~~होकर प्रसाद आश पर । संग हमारे आये बाहर~~ ।
राजा प्रसाद हमसे पाकर । आया संग वो हमारे बाहर ।
सिंहासन पर उसने हमें बिठाया । नामदेव हमारे सम्मुख आया ।
नामदेव को भी आसन दीन्हा । सम्मान बहुत उसका कीन्हा ।
नामदेव जब वहाँ विराजे । हम संग प्रश्न करने लागे ।

नाम देव वचन

ज्ञानी कबीर हमें समझाये । शब्द तुम्हारा कहाँ से पाये ।
साहिब कौन सबसे न्यारा । संशय मिटाओ तुम जरा हमारा ।
निशदिन आप किसको ध्याते । मोक्ष प्राप्ति को ध्यान कहाँ लगाते
कैसे जीव यम से बचता । सत्य ~~बता~~ कहो हमें जोगी रमता ।
~~आप जानो पूछो~~
आप ना जानो पूछो राजा । राम बिन होय जीव अकाजा ।

राम गुण पढो और गाओ। हरिभक्ति बिन पार ना पाओ।

कबीर वचन

नामदेव तुम मूरख जैसे। हमको अज्ञानी समझते वैसे।
निर्गुण पुरुष एक जगत का। बखान करते पुराण भी उसका।
शिव ब्रह्मा नहीं पाते पार। और जीव क्या करें विचार।

छन्द / दोहा :- करते साधना पुरुष की, ब्रह्मा विष्णु महेश।
ऋषि मुनि इन्द्र साधते, महिमा गाते सुर शेष।
नारद मुनि शारदा, पा सके ना इनसे पार।
जानते भेद सतगुरु, संत समझते इनका सार।

सोरठा / दोहा :- पूजते घरे हर देव को, जीव वो मूर्ख महान।
~~सेवा करे~~
~~निशदिन सुरत सेवा कर~~
रात दिन पूजा करें, भक्षक बने भगवान।

नामदेव सुन के लजाये। पाये ना भेद मन पछताये।
लज्जा मान उठकर जाते। राजा तब हमें बताते।
~~राजा बोले तब हमसे बात। शिकार को चलो साथी साथ।~~
राजा बोले तब हमसे बात। शिकार को चलिये मेरे साथ।
सेना अपनी बहुत बुलाते। हाथी घोड़े बहुत मगाते।
बहुत से हाथी लेकर साथ। शिकार को जाते प्रजा नाथ।
अस्त्र शस्त्र अनेकों लीन्हा। आज्ञा फिर सबको दीन्हा।
आगे अपने सेना को चलाते। उनके पीछे हम दोनों जाते।

कबीर वचन

राजा जब वन में जाते। एक बात हम उन्हें बताते।
राजा संग हमें लेके जाओ। जीव एक मार नहीं पाओ।
~~राजा चाहें करें अनेकों~~
चाहें अनेक तुम करना काज। जीव ना मरे तो आये लाज।

राजा वीर सिंह वचन

तत्क्षण राजा वचन सुनाये । जिसको कहें उसे मार गिराये ।
तब हम राजा से कहते । मनुष्य अधर्म ना ऐसे करते ।
यह सुन राजा ताव लगाये । शेर शिकारी रूप बताये ।
वन में जीव ना उसको मिलते । क्रोध में राजा बहुत ही जलते ।
शिकार खेलते वन भरमाये । एक जीव ना वन में पाये ।
वन में फिरते सुधि भुलाये । पानी कहीं ना उसको पाया ।
बिना जल के राजा तड़पता । लगे प्यास ना काम ही बनता ।

दोहा :- बहुत दूर राजा गये, पीछे पीछे सब दास ।
राजा सहित सेना को, विकल करती प्यास ।

पानी पानी सब चिल्लाते । बिन पानी के सब घबराते ।
आदेश राजा तभी सुनाते । ढूंढो जीव जहाँ छिप जाते ।
बहुत लोग जल ढूंढने लगे । बहुत लोग वहाँ से भगे ।
अपनी सुध बुध सभी भुलाये । हाथी घोड़ा सभी नशाये ।
राजा तब सोचने लगता । संशय एक मन उसके उठता ।

राजा वीर सिंह वचन

आज शिकार ना दिखाई पड़ता । जल भी ना कहीं हमको मिलता ।
लीला ऐसी जो आज रचाई । इसको कर्ता कौन गुसाई ।
खबर जो मैं इसकी पाता । आज शिकार ना करने आता ।
सेना हमें प्राण सम प्यारी । प्यास से विकल फिरती सारी ।
उपाय अब कोई हमें बताये । बिना जल सब मरते जाये ।
व्याकुलता बहुत मन में बढ़ती । राह ना कोई उसको मिलती ।
तभी जीव वहाँ पर आये । खोज थके जल ना पाये ।

दोहा :- सेना सब मरने लगी, पानी पानी चिल्लाय।
पेड़ छाँव सब ढूँढते, राजा रहे सिर नाय।

चौपाई

तभी विचार हम ऐसा करते। राजा विश्वास हम परखते।
वीर सिंह राजा एक महान। विश्वास बढ़ाने को करें इककाम।
भक्ति ना होती बिन विश्वास। बिना भक्ति जीव होते नाश।
बिन भक्ति गुरु ना मिलते। बिन गुरु ना संशय मिटते।
हृदय संशय बिना मिटाये। काल फन्द जीव फसाये।
मन विश्वास जो भी करता। फन्द चौरासी उसका कटता।
विश्वास नर जो भी करता। गुरु शरण फल उसको मिलता।
गुरु के वचन जिसे विश्वास। ना करता वो नरक में बास।
गुरु बिन ना मुक्ति पाते। चौरासी का भय नहीं मिटाते।
इसकारण हम किये उपाय। राजा मन विश्वास जगाय।
सुन्दर सरोवर एक रचाया। बाग बगीचा महल बनाया।
फुलवारी बहुत वहाँ लगाये। मेवा बहुत वहाँ लगाये।
फूल अनेक वहाँ खिलाये। सुगन्ध बहुत मन को भाये।
नाना पक्षी गाते गाना। जहाँ तहाँ उड़ खाते दाना।

दन्द / दोहा :- नाना भाँति फूल खिले, खिली सुन्दर फुलवार।
चम्पा चमेली मोगरा, गुलाब खिले अपार।

सोरठ / दोहा सेब केला बहुत उगे, उगे काजू व बादाम।
मन भावन सब लगे, अति प्रिय उनके नाम।

चौ०

ऐसे बाग लगी फुलवारी। लगती शोभा सबको प्यारी।
सेना सारी बहुत घबराती। पानी पानी बहुत चिल्लाती।

तब राजा को हम बात बताते । सत्य वचन ये उसे सुनाते ।
उत्तर दिशा में अब तुम जाना । थोड़ी दूर बहुत जल पाना ।
उत्तर दिशा शीघ्र सिधाओ । थोड़ी दूर जल बहता पाओ ।
जल बिन सेना मरती जाये । प्यास सेना की शीघ्र बुझाये ।
चरण शीश वो हमारे रखता । हाथ जोड़ एक विनती करता ।

राजा वीर सिंह वचन

सतगुरु वचन कैसे बताये । पर्वत ऊपर जल कहां बहाये ।
बारम्बार हम ऊपर जाते । पर्वत ऊपर जल नहीं पाते ।
साहिब बोलो कुछ ऐसे वाणी । हँसे ना जिससे सारे प्राणी ।

दीवान वचन

तब उसको दीवान बताता । गुरु वचन ना खाली जाता ।
कहे दीवान जोड़ अपने हाथ । गुरु के वचन सत्य मानो नाथ ।
कोई ना जाने कौन ये ज्ञानी । गुरु चरण पकड़ो स्वामी ।

राजा वीर सिंह वचन

सतगुरु हमको करना माफ । दास के गुनाह भुलाना आप ।
वही करें जो आप बखाने । वचन आपका सदा ही माने ।

कबीर वचन

तब हमने उसे बताया । उत्तर दिशा का मार्ग दिखाया ।
राजा सारी सेना को बुलाता । फिर उत्तर की ओर सिधाता ।
राजा बहुत हर्ष मनाते । बाजे गाजे बहुत बजाते ।
राजा नजर दूर तक जाती । शोभा वहाँ की उनको भाती ।
सुन्दर बाग वहाँ सुहाते । राजा देख आनन्द मनाते ।
सरोवर निकट राजा जाता । गुरु के चरण शीश झुकाता ।
फल बहुत वहां पर लगते । फुलवारी फूल अनेको खिलते ।

विभिन्न प्रकार की मेवा लागे । राजा के मन भक्ति जागे ।
शोभा बाग की अति सुहाये । वर्णन उसका हो ना पाये ।

राजा वीर सिंह वचन

छन्द / दोहा :- साहिब सम्मुख नृप खड़ा, चरण झुकाये शीश ।
मैं पापी अधर्मी कुटिल, आप पावन ईश ।

सोरठा / दोहा :- बालक जो भूल करे, तो पिता ना लाव ताव ।
दीन जान हमें तारिये, आप भवतारन नाव ।

साखी / दोहा :- सेना सरोवर देखती, उत्तम निर्मल नीर ।
पर्वत पर सरोवर रचे, धन धन सतकबीर ।

चौपाई

राजा चरण हमारे पड़ते । प्रसाद की मांग हमसे करते ।
प्रसाद हम राजा को देते । राजा संग और भी लेते ।
मेवा सकल लोग मिल पाते । बहुत भाँति सब शुक्र मनाते ।
राजा प्रजा सब करे बड़ाई । सब मिल बातें करते भाई ।
मेवा सतगुरु देते जैसी । स्वर्ग में भी ना मिलती ऐसी ।
खाते खाते जन्म बिताये । मेवा ऐसी कहीं ना पाये ।
ले प्रसाद जल पीते प्यारा । दुख संताप भुलाते सारे ।
ले प्रसाद सब पीते नीर । दुख संताप को भुलाते पीर ।
चक्कर बाग में सभी लगाए । गर्मी सर्दी ना वहाँ सताये ।
सुगन्ध प्रिय उड़ती चारों ओर । बहुविधि पक्षी करते शोर ।
राजा देखे जब बाग बगीचे । मन आनन्द रस उसका सींचे ।

साखी / दोहा :- तृष्णा सब की बुझे, ऐसा निर्मल नीर ।
मेवा पाये सब मिले, तृप्त हुआ शरीर ।

कबीर वचन-चौ०

हम बोले सुन राजा प्यारे । पूर्ण हुये सब काम तुम्हारे ।
राजन घर अब अपने जाओ । यहाँ का जल वहाँ बहाओ
अब हम अपने लोक सिधाते । सत्य पुरुष का दर्शन पाते ।
वहाँ की शोभा अन्त अपार । शिव ब्रह्मा नहीं पाते पार ।
सुन वचन राजा भय सताये । जान बिछोह मन शोक मनाये ।
विनती करता जोड़ अपने हाथ । हुये अधीन आपके नाथ ।

राजा वीर सिंह

राजा चरण पकड़ अकुलाये । निज दास गुरु हमें बनाये ।
अब स्वामी महल पधारें । बनाके शिष्य हमको तारें ।
अब पराया ना हमको जानें । अपना सेवक हमको मानें ।
राजा प्रीत बहुत दिखाता । जिससे मैं संग उसके जाता ।
राजा हाथी पर हुआ सवार । हमें भी बिठाये करके प्यार ।
तभी राजा सबको बताये । जल भरने का आदेश सुनाये ।
सरोवर छोड़ जो हम जाते । सरोवर बाग सभी मिटाते ।

राजा जब पीछे करता । नहीं सरोवर धुआँ उड़ता ।
राजा देख अचरज करता । श्रद्धा से पग मेरे पड़ता ।

साखी / दोहा :- धन्य कबीर सरोवर रचे, सब जीव लिये बचाय ।
जहाँ से जल लाये तुम, वहीं दिया पठाय ।

चौपाई

राजा आगे हमको करता । तब राजा आगे बढ़ता ।
राजा प्रवेश महल में करता । सतगुरु को आगे अपने रखता ।
सोने का एक पलंग बनाया । सतगुरु को फिर वहाँ बिठाया ।
मानिक रानी वहाँ पर आई । राजा ने गुरु महिमा उसे सुनाई ।

राजा वीर सिंह वचन रानी प्रति

चरण टेक चरणामृत लेलो । गुरु की दया का अमृत पीलो ।
लोक की लाज देखी मियाओ । गुरु शरण में रानी आओ ।
गुरु कृपा का जब सागर बहता । काल का वश ना हमपे चलता ।
ज्ञान भक्ति बिन गुरु ना मिलते । काल फन्द में हम ना फँसते ।
सगुण भक्ति सभी बताते । निर्गुण भक्ति गुरु से पाते ।
बिन निर्गुण ना मुक्ति पाते । बार बार ना जग में आते ।

छन्द / दोहा :- गुरु कृपा जिस दास पे, उसका मिटे यम त्रास ।।
गुरु भक्ति मुक्ति दायनी, कराती लोक निवास ।।
संशय हरते सतगुरु, सदा ही हंस सहाय ।।
गुरु चरण सेवसे, पुरुष लोक सिधाय ।।

चौपाई

सरोवर गुरु वहाँ रचाये । पर्वत ऊपर उसे बहाये ।
बाग इक रचाया उसके तीर । त्रिविध वायु बहे निर्मल नीर ।
नाना भाँती पेड़ उगाये । देवता देख जिसे लजाये ।
नाना रंग फुली फुलवारी । फल रस भरे झुकी सब डारी ।
रानी से राजा सबकुछ कहता । जीव हित को विनती करता ।

राजा वीर सिंह वचन

कहके राजा शीश नवाता । हुये दयाल दयानिधि दाता ।
आवागमन रहित मुझे कराओ । निज चरणों का दास बनाओ ।
~~सब~~ लोक देखने की विनती करता । प्रभु आपके पैर पकड़ता ।

कबीर वचन

सत्य प्रीत जब राजा करता । बहुविधि मैं उसे परखता ।
निज नाम मैंने उसे सुनाया । राजा के संग लोक सिधाया ।
~~तभी देव एक हमको रोका । राजा को देख हमको~~
~~वहाँ~~ लोक द्वार इक दूत रोकता । देख राजा को हमें टोकता ।

दूत वचन

साहिब तुम निर्मल रामी । पर राजा कहँ जाता स्वामी ।

कबीर वचन

~~[illegible]~~ ।
मैं दूत को तभी बताता । राजा नाम पुरुष का ध्याता ।
यह ~~[illegible]~~ सुन दूत द्वार छोड़ता । देखके राजा हाथ जोड़ता ।

राजा वीर सिंह वचन

धन्य सतगुरु धन्य महान । धन्य हंस जो जपते नाम ।
संग हमारा राजा जाता । जहाँ कष्ट ना कोई पाता ।
मान सरोवर दोनों जाते । शोभित दृश्य बहुत सुहाते ।
झुण्ड बना सब बैठे पाँती । एक रूप वहाँ नहीं जाती ।
कामिनी रूप सूर्य समान । ना सुबह वहाँ ना शाम ।
राजा शीश हमें झुकाये ।

राजा वीर सिंह वचन

प्रभु भला आप लोक दिखाये ।

कबीर वचन

देखे राजा लोक की शोभा । राजा मन बहुत ही लोभा ।
राजा फिर हमें बताये । देख लोक मन ललचाये ।

राजा वीर सिंह वचन

~~तब हम कहे सुन राय सुजाना~~ ।
प्रभु सतलोक मुझे बसाना । लौट जगत ना हमको जाना ।

कबीर वचन

तब हम कहे सुन राय सुजाना । तुम राजा सत्यलोक भुलाना ।
राजा मानो कहा हमारा । चलो वहाँ जहाँ राज तुम्हारा ।
बाँह पकड़ हम उसको लाते । नृप आत्मा शरीर बसाते ।
क्षण एक ना वहाँ लगाया । संसार लौट राजा को जगाया ।
खड़ा जोड़ दो अपने हाथ । बढ़ा प्रेम हर्ष के साथ ।

राजा वीर सिंह वचन

साहिब तुमको मैं नही जाना । सकल भक्त सम तुमको माना ।
अब जाने हम भेद तुम्हारे । प्रभु आप अब हमको तारें ।
साहिब विनती आपसे करता । सब अपना चरणों में धरता ।
काल त्रास से प्रभु बचायें । उपाय उसके हमें बतायें ।

कबीर वचन

राजन दिलाऊँ तुम्हें निशानि । राजा मंगाओ मिठाई पान ।
चौका सुमति करो सब साज । सब जगत की मिटाओ लाज ।
नारियल धोती पान मंगाओ । महा कन्द ले वहाँ धराओ ।
कलश जलाओ दीपक बाती । साधु संत बिठाओ पाती ।
कंचन लोटा जल का मंगाओ । उसपर सात बेल पत्र सजाओ ।
सतलोक के स्वेत हैं फूल । सब जीवों का स्वेत ही मूल ।
स्वेत सिंहासन एक सजाया । सतगुरु को वहाँ बिठाया ।
केला पत्र मेवा सारी । चन्दन स्वेत खुशबू प्यारी ।
राजा वस्तु सारी लाये । साधु संत सभी बुलाये ।
विधिपूर्वक शुभ चौक पुराया । राजा शीश वहाँ झुकाया ।
शब्द धुनि साधु सभी लगाते । राजा रानी भी ध्यान लगाते ।

राजा वीर सिंह का सतगुरु की स्तुति करना

राजा लिये नारियल हाथ । बहुत जीव वहाँ हुये सनाथ ।
करके दंडवत विनती कीन्हा । हम राजा मुझे दर्शन दीन्हा ।
धन्य भाग हैं मेरे ज्ञानी । आप ही पुरुष मेरे स्वामी ।

छन्द / दोहा :- आनन्द कन्द सर्वज्ञ रूप, आदि पुरुष महान ।
अभय पद हमको दिजिये, दास हमें अपना जान ।
धर्म की रक्षा सदा करें, दयालु प्रभु अविनाश ।
अजर अमर पुरुष ही, करते शत्रु नाश ।

सोरठा / दोहा :- अमर स्वरूप हंस जहँ, वहीं आपका बास ।।
लोक वास हमें कराइये, जान के अपना दास ।।

कबीर वचन चौ०

राजा बन गया शिष्य हमारा । आरती गाते रात गुजारा ।
तिनका तोड़ पान लिखाये । राजा रानी निज भक्त बनाये ।
बहुत जीव पान हमसे पाते । सत् शब्द हम उन्हें बताते ।
जो कोई नाम हमारा पाता । योनी संकटना उसको आता ।
नाम पके भव से छूटे । बिना शब्द यम घर-घर लूटे ।
~~नाम पाय सब~~
नाम पाके नृप भय भागा । ज्ञान हृदय उसके जागा ।
~~नाम पाके~~
काल का भय ना उसे सताता । जबसे राजा शब्द हृदय बसाता ।
हर्ष मन उसके बढ़ता जाता । प्रेम से विनय हमें सुनाता ।
प्रेमाश्रु दोऊ नैन बहाते । शब्द मुख से निकल ना पाते ।

राजा वीर सिंह वचन

छन्द / दोहा :- करुणा रमन हंस सतगुरु, आप मुक्तिधामी नाम ।।
जो शरण आते आपकी, बनाते उनके काम ।।
भवसिन्धु विकराल अति, कवट उसके आग समान ।
पुरुष दर्श मुझे कराइये, दे अजर बीरा नाम ।

सोरठा / दोहा :- आवागमन जिस घर नहीं, जहाँ पुरुष रहाय ।
चलिये उसी लोक को, राजा शीश नवाय ।।

कबीर वचन

सत्य शब्द राजा को बताये । गुरुमुख जीव सभी बनाये ।
राजा जब नाम को सुनता । दृढ़ विश्वास उसपे करता ।
सत्य पुरुष सत्य का मूल । सत्यशब्द है जीव का मूल ।

सत्य द्वीप सत्य का लोक । जहाँ ना करता कोई शोक ।
सत्यनाम जीव जो भी पाता । जीव वही लोक सिधाता ।
सत्य शब्द नाम है न्यारा । जिससे दूर रहे काल बेचारा ।
नाम वही जन राजा पाता । पुरुष दर्श मन में पाता ।

साखी / दोहा :- ऐसा नाम पुरुष का, राजा जपे दिनरात ।
हर्षित पहुँचे लोक को, यम से छुड़ाके हाथ ।

चौपाई

जब हंस यम छेककें जाता । यम बहुत उसे मनाता ।
मंडल अखण्ड यहाँ पर बसते । नीर पवन झरना बहते ।
सुकृत निवास जहाँ पर करते । रत्न समान दीपक जलते ।
छोड़ भव हंस लोक सिधाता । शरण पुरुष लोक में पाता ।
जब हंस पुरुष लोक में जाते । यम बहुत वहाँ रोक लगाते ।
साखी / दोहा :- चले हंस सतलोक को, सुरति शब्द की डोर ।
पुरुष लोक के द्वार पर, बैठे काल के चोर ।।

चौपाई

भवसिन्धु व लोक के बीच । बैठे वहाँ यम दूत नीच ।
लोक प्रवेश पर रोक लगाते । पुरुष नाम सुन निकट ना आते ।
सुगदानी हैं वहाँ शठिहार । माँगते छोड़ो जीव हमारा ।
प्रथम प्रेमसहित वो कहते । पीछे प्रहार उनपे करते ।
घट जिसके शब्द है बसता । उसको कोई रोक ना सकता ।
नाम प्रान जो हृदय रखता । वो हंस यम से बचता ।
साखी / दोहा :- ना धरती ना आकाश जब, नहीं था ये संसार ।
तबसे संत कबीर हैं, है यम दरबार ।

राजा वीर सिंह वचन

साहिब शब्द सार मुझको दीजे । शिष्य अपना हमें कर लीजे ।
सारे संसार को मैंने बताया । भेद पाँजी का मैंने पाया ।
दयावंत सुनिये मेरी प्रार्थना । कठिन बहुत है नरक यातना ।
महा कुटिल मैं महा कामी । इसलिये बना नरक का गामी ।
अरज करूँ आपसे हे भगवान । विनती करूँ मैं नरक समान ।
भ्रम मिटाके हमें मुक्ताओ । शब्द प्रभाव प्रभु हमें बताओ ।

कबीर वचन

अजर नाम चौका सजाओ । जीव अपना तुम पार लगाओ ।
गाँव तुम्हारे ब्राह्मणी जाती । धोती बुनती भाँती भाँती ।
धोती तुम उससे लेकर आना । पीढ़ि नाम चौका पुरवाना ।

राजा वीर सिंह

तब राजा विनती हमसे कीन्हा । प्रभु द्विज पहचान हमको दीन्हा ।
ब्राह्मणी नगर कहाँ करती वास । खबर ना इसकी हमारे पास ।

कबीर वचन

तब राजा आप सिधाते । नेगी इक संग लेकर जाते ।
ब्राह्मणी खोज राजा करते । ब्राह्मणी पता नगर पूछते ।
खबर ब्राह्मणी जब ये पाती । तुरंत सत्कार करने आती ।

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणी जोड़ी अपने हाथ । सुनिये विनती मेरी नाथ ।
भाग्य मेरा जो दर्शन पाये । दासी घर आप चलके आये ।
अ भाग्य मेरा मिले दर्श तुम्हारे । दासी घर क्यूँ आप पधारे ।

राजा वीर सिंह वचन

राजा ने तब उसे बताया । धोती तुमसे मैं लेने आया ।
धोती माता हमको देदो । गाँव नगर जो चाहे लेलो ।
माता जो राखो हमारी लाज । धोती दो तो बनेगा काज ।

ब्राह्मणी वचन

~~ब्राह्मणी वचन यह~~
~~ब्राह्मणी राजा से यह रूप~~

ब्राह्मणी प्रश्न पूछे उससे । धोती सुध कौन कहा तुमसे ।
ब्राह्मणी कहे सुनो हे राया । धोती सुधि तुम्हें कौन बताया ।

राजा वीर सिंह वचन

सतगुरु एक हमें समझाये । धोती सुध हम उनसे पाये ।

कबीर वचन धर्मदास से

~~वचन~~ सुनके अचरज वह मनाती । विनय करके राजा को बताती ।

ब्राह्मणी वचन

छन्द / दोहा ब्राह्मणी विनय कर कहे, सुनिये बात अनाथ की ॥
उपहार ना मुझे चाहिये, धोती प्रभु जगन्नाथ की ॥
आधीन प्रभु हम आपके, काटिये शीश हमार ॥
हाथ जोड़ विनती करु, ना चाहिये उपहार ॥

कबीर वचन

सोरठा / दोहा :- राजा आया लौट के, पहुंचा सतगुरु पास ।
बताया उन्हें संकोच से, लाया ना धोती साथ ।

राजा वीर सिंह वचन चौपाई

धोती हमको ना दी माई । जगन्नाथ को धोती वह बनाई ।
ब्राह्मणी करती विनय प्रार्थना । धोती बिन हो भंग साधना ।

कबीर वचन

बात सुनके हम मुस्काते । राजा को फिर आदेश सुनाते ।
सैनिक उसके घर भिजवाना । आदेश अपना उन्हें बताना ।
जगन्नाथ पुरी संग उसके जायें । ब्राह्मणी संग धोती वहां चढ़ाये ।
राजा सैनिक वहाँ सिधाते । जगन्नाथ पुरी संग उसके जाते ।
नारियल ब्राह्मणी लेती हाथ । ~~जाती मंदिर श्रद्धा~~ चढ़ाती धोती श्रद्धा साथ ।
धोती जब वो वहां चढ़ाती । धोती वहाँ से बाहर आती ।

ब्राह्मणी वचन

यह धोती काम ना आये । धोती बाहर क्यूँ फिकवाँए ।

जगन्नाथ वचन

जिसको तूने इसे बनाया । घर बैठे वो इसे मगाँय ।
अब तुम अपने ले जाओ । और किसीको इसे पहनाओ ।

ब्राह्मणी वचन

तब ब्राह्मणी जोड़ती हाथ । सुनिये विनती मेरी नाथ ।
वीरसिंह नृप घर मेरे आये । धोती उससे कबीर मगाये ।
उनके माँगे मैं नही दीन्ही । हम कहे जगन्नाथ व्रत कीन्ही ।
तब राजा घर अपने जाते । हम धोती को तुम्हे चढ़ाते ।

जगन्नाथ वचन

जगन्नाथ तब उसे समझाते । दुविधा उसकी वही मिटाते ।
उनके माँगे धोती देती । अपना जनम सफल कर लेती ।

कबीर वचन

जगन्नाथ जब उसे समझाये । लौट ब्राह्मणी वहाँ से आये ।
सैनिक संग ब्राह्मणी आये । जहाँ आसन हम राजा लगाये ।
ब्राह्मणी साथ में धोती लाती । हाथ जोड़के विनय सुनाती ।

छड़ीदार वचन

सैनिक तब शीश नवाये । राजा को सारी बात बताये ।
जगन्नाथ धोती ना इसकी लीन्हे । मन्दिर बाहर धोती कीन्हे ।
जगन्नाथ वचन ऐसे सुनाए । धोती यह हमारे काम ना आए ।
जब राजा लेने आये इसको । धोती क्यूँ ना दी तुम उनको ।
जब हम मंगाए ना भिजवाई । अब काहे तुम देने आई ।

राजा वीर सिंह वचन

सत्य वचन है तुम्हारे नाथ । सत्य लोक की सत्य है बात ।
अब शिक्षा मुझको देदो ज्ञानी । शिष्य अपना हमें बनाओ स्वामी ।
जिससे अजर अमर पद पाता । विधि वही तुम करना दाता ।
तब हमने उसे समझाया । अजर आरती साज मंगाय ।
वीर सिंह तब साज मंगाए । बहुत भांति पकवान पकाये ।
मेवा भांती भांति मंगवाते । सुगन्ध बहुत वहाँ कराते ।
चौका पुराके थार मंगाया । कोरा बर्तन एक धरवाया ।
कलश ऊपर दीप जलाये । ततक्षण सकल साज बनाये ।
राजा मन में दृढ़ विश्वास । बहु विधि करता वो अरदास ।

छन्द / दोहा :- अजर नाम चौका सजा, बिताये दिन चार ॥
पुरुष सुमिरन जब किया, प्रकटे प्रभु करतार ॥
धनी जब प्रकट हुये, राजन दर्शन पाय ॥
सतगुरु चरण वो पड़ा, प्रभु दिये पाप मिटाय ॥

राजा वीर सिंह वचन

सोरठा / दोहा :- साहिब हमको तार दिये, चरण जाऊँ बलिहार ॥
काग से हंस हम हुये, हुये भव से पार ॥

कबीर वचन

यही विधि प्राणी चौका करते । कुल जन सारे उसके तरते ।
चार दिन तक जो चौका सजाते । वहाँ सतपुरुष स्वयं सिधाते ।
दिन रात जो जपता नाम । छोड़ के पिण्ड जाता धाम ।
~~गुरु कबीर चकोर समचरण~~ ।
राजा सुरति दिन रात लगाते । एक टक सतशब्द को ध्याते ।
चकोर सी प्रीत गुरुपद लागे । छूटे जनम मरण भ्रम भागे ।
राजा शिक्षा ये हमसे पाये । वचन ये राजा हृदय बसाये ।

राजा वीर सिंह वचन

राजा खड़ा जोड़ अपने हाथ । सुनिये विनती हमारी नाथ ।
पुत्र विवाह की आज्ञा पाऊं । तो साहिब पुत्र विवाह कराऊं ।

कबीर वचन

विवाह आज्ञा नृप हमसे पाता । सैनिक साज बहुत सजाता ।
तब शीश वो हमारे पड़ता । फिर विनय वो हमसे करता ।

राजा वीर सिंह वचन

करुणा वचन सुनाये । क्या पता मृत्यु हमें आ जाये ।
साहिब सदा सहाई मेरे बनना । देना मुक्ति जब हो मरना ।

कबीर वचन

हाथ शीश हम उसके रखते । राजा काहे चिन्ता करते ।
तुम तो राजा हंस हमारे । होकर निर्भीक जाओ प्यारे ।
चरण टेक राजा वहाँ से पधारे । चले वीर तो बजे नगाड़े ।
सजाके बरात राजा सिधाये । लीला तब हम भी रचाये ।
तब हम शरीर अपना त्यागे । रानी सरंकार करने लागे । or
or तब हम शरीर अपना त्यागे । रानी को चिता की लागे ।
रानी शोच मन बहुत मनाये । राजा बिन गुरु प्राण गँवाए ।
बिजली खाँ सुन दौड़ के आता । शव हमारा संग लेके जाता ।
बहुविधि क्रिया हमारी करता । कब्र बनाके नवाज वो पढ़ता ।

बिजली खाँ वचन

कहे पठान पीर हम लाए । नहीं तो रानी रही जलाए ।

कबीर वचन

यहाँ रानी बहुत अकुलाती । राजा को लिख भेजे पाती ।

छन्द / दोहा :- पत्र भेजे रानी राय को, सतगुरु सिधाये लोक ॥
तुम बिन गुरु तन तजे, इसका हमको शोक ॥
आया बिजली खान तब, जब चिता रही जलाय ।
बल से शव को ले गया, कब्र दिया बनाय ।

कबीर वचन

पत्र जब राजा ने पाय । क्रोध कर लौट के आया ।
आग मे घी डलता जैसे । रोम रोम सारा जलता वैसे ।
घोड़ी दल और घोड़ी बरात । निकलता संग कहता बात ।

राजा वीर सिंह वचन

राजा कहे सुनो दिवान । शीघ्र चलो शत्रु स्थान ।
सेना सारी शीघ्र सजाये । बिजली खान को मार गिराएँ ।

कबीर वचन

आतुर सैनिक रण में जाते । संग अस्त्र शस्त्र बहुत ले जाते ।
खड्ग ढाल भाले सेल कटार । चले जाते धनु बाण सवाँर ।
हाथ लेके धनुष और बाण । रण भेरी बजाते सब बलवान ।
शत्रु सम्मुख जा करे पुकार । युद्ध हेतु लगाते हैं ललकार ।
भेज संदेश नृप ललकारे । खोद कब्र गुरु देदो हमारे ।
नही तो बिजली बच ना पाए । एक एक को मार गिराएँ ।
सुनके संदेश कहता खान । लड़ाई को चले सभी बलवान ।

बिजली खाँ वचन

जान चाहे हमारी जाये । हिन्दू राजा पीर ना पाये ।

कबीर वचन

बिजली सेना लेकर जाता । युद्ध गर्जना पुरजोर लगाता ।
राजा चाहे जो भी करना । पीर ना देंगे तुमको अपना ।
~~[illegible]~~
रानी सम्मुख तब मैं जाता । मानिक देवी को दर्श दिखाता ।
होती एक थी कमला रानी । पग धुला मेरे पीती पानी ।
रानी राजा ना हमको जानें । मानव शरीर वो हमको मानें ।
हाड़ मांस ना हमारी काया । राजा ~~चाहे~~ किस कारण वार बढ़ाया ।
नृप पठान दोनों गुरु भाई । काहे दोनों करें लड़ाई ।
रणक्षेत्र पाती इक भिजवाओ । खोद के कब्र पता लगाओ ।
~~[illegible]~~
कबर माहीं ना मुरदा पायें । राजा पठान क्यूँ युद्ध करायें ।
मथुरा में एक रतना नारी । बहुत करती वो प्रीत हमारी ।
सात दिन नहीं भोजन खाया । हमारे दर्श को ध्यान लगाया ।
दर्शन हम उसको देने जाते । अतिशीघ्र वहाँ से हम सिधाते ।
तब हम हो गये अन्तर्ध्यान । तत्क्षण ~~की~~ रतना की दर्शन पान ।
यहाँ रानी ने पत्र भिजवाया । राजा अचम्भा देख मनाया ।
पढ़कर वो खान सम्मुख जाता । सुन पठान अचरज मनाता ।
सुनके सलाह दोनों करते । कब्र पास वह दोऊ पहुँचते ।
आके पठान कब्र खुदवाया । वहाँ ना शव गुरु का पाया ।
अचम्भा सभी मनाते लोग । करुणा कर सभी करते शोग ।

छन्द / दोहा :- गुरु पद पंकज पाय के, हंस बनते सब काग ॥
धन्य गुरु हमको मिले, हंस हम बड़े भाग ॥
~~[illegible]~~

दुचादोहा — विराजते जहाँ सतगुरु, वहाँ पहुँचे ना यमराज ॥
असंख्य सूर्य चमकते, जहाँ शोभित हर साज ॥

चौपाई

कब्र फिरश्ते सभी बनाते । हिन्दु मुस्लिम साथ में आते ।
नाना भाँति सब उसे सजाते । कंठी तिलक मन का लुभाते ।
धन्य राजा धन्य पठान । सतगुरु जो पाये महान ।
सुन्दर देवी एक रानी रहती । पाके शब्द ना प्रीती करती ।
शब्द पाके गुरु प्रीत ना करती । बिना प्रीत ना होती भगती ।
पाके शब्द ना पुण्य कमाये । इसकारण यम उसे सताये ।
चार दूत तब हरि बुलाये । बात अपनी उन्हें समझाये ।
राजा रानी पकड़ तुम लाओ । दोनों को पास हमारे लाओ ।
यमदूत वहाँ से शीघ्र सिधाये । महल राजा के पहुँचे आये ।
रानी मन बहुत घबराता । समझ ना उसको कुछ भी आता ।
राजा प्रश्न रानी से करता । रानी कहे कुछ ना अच्छा लगता ।
एक बात सुनिये मेरे स्वामी । साधु संत बुलाओ सारे ज्ञानी ।
राजा सकल साधु बुलाते । सतगुरु भक्ति में ध्यान लगाते ।
तभी यमदूत आये उनके पास । अरध अरध चलती श्वास ।
भाग हंस त्रिकुटी में छिपता । वहाँ यमदूत उसको मिलता ।
चारों यमदूत घेरते उसको । कौन बचाये हंस अब तुमको ।
चलो हंस तुम्हे यमराज बुलाता । तब हंस वचन उन्हे सुनाता ।
यहाँ आये तुम कैसे सारे । समर्थ पुरुष जो संग हमारे ।
गुरु एक घर हमारे आये । सत्य शब्द वो मुझे बताये ।
जो साहिब वो मुझे नाम सुनाये । पहले हम उन्हे यहाँ बुलाये ।

साखी/दोहा : तब यमदूत उससे बोलते, कहाँ है धनी तुम्हार ॥
उनको शीघ्र बुलाइये, नहीं तो चलो हरि दरबार ॥

तब जीव यम को बताये | साहिब वचन ये हमें सुनाये |
निगम के पार अगम के आगे | वो सतगुरु वचन बताने लागे |
धरती आकाश से नगर है न्यारा | वहाँ विराजे धनी हमारा |
चाँद सूरज ना वहाँ चमकते | दिन रात ना वहाँ निकलते |
अगम शब्द जब उसे बताये | यम निकट ना उसके आये |
चलो जीव हरि ब्रह्म पास | साहिब दर्श कीना हमको आस |
तभी हंसा हमें पुकारा | कहाँ है तू धनी हमारा |
ये यम हमें बहुत सताता | कहाँ हो तुम सतगुरु दाता |

दूहा / दोहा :- सतगुरु शीघ्र आइये, जीव रहा पुकार ||
हमको लोक पठाइये, लगाता यही गुहार ||
साहिब मात पिता ना कोई, किसको रहे पुकार ||
जग बन्धन झूठे सभी, चलो जीव यम दरबार ||

चौपाई

सतगुरु आसन गया तब डोल | सुनकर भक्त के व्याकुल बोल |
आकर साहिब तब दर्शन देते | चरण वन्दना हंस उनकी लेते |
भागा देख उन्हे यमराया | आतुर होके हरि सम्मुख आया |

हरिहर वचन

हरिहर पूछे यम से बात | क्यों नहीं किया जीव को घात |

दूत वचन

सुनिये स्वामी हमारी बात | किया ना कर्म अपना नाथ
जीव सत्यसुकृत को ध्याता | सुनके धनी वहाँ पर आता |
फैला वहाँ बहुत प्रकाश | हम भागे तब आपके पास |

कबीर वचन

यमदूत हरे सम्मुख जाते | यहाँ जीव सब कथा सुनाते |

जीव वचन

जीव विनती हमे सुनाये । यमदूत बहुत हमे सताये ।
यमदूत आपका नाम पूछते । बताके नाम तभी हम बचते ।
या यमदूत पूछते नाम तुम्हारा । बताके नाम बचा जीव हमारा ।
साहिब जब हम तुम्हे पुकारे । काहे ना आये पास हमारे ।

ज्ञानी वचन

जीव शब्द ना तुमने ध्याया । राजा तुमने उसे भुलाया ।
जपके नाम पुण्य कमाओ । यमदूत को खुद से दूर भगाओ ।

जीव वचन

जिससे हंस लोक सिधाये । नाम वही मुझे आप सुनाये ।

कबीर वचन

साखी / दोहा :- गुप्त नाम उसे बताये हम, अटल अमर निजनाम ।
अमर कृपा निधि जीव की, पहुँचे जीव निजधाम ।

चौपाई

जब जीव सतलोक सिधाते । सुख आनन्द बहुत वो पाते ।
कंचन कलश जलती बाती । आरती करे हंस अनेकों भांती ।
देखके जीव हंस उजियारा । अंग अंग शोभित प्यारा ।
रवि शशि सम लोक चमकता । द्वीप दृश्य सुन्दर लगता ।
सतलोक मध्य लाल जड़ाये । देख हंस वहाँ ललचाये ।
ज्ञानी को तब पुरुष बुलाये । किस जीव को तुम नाम सुनाये ।
कौन वचन तुम उसे सुनाये । जिससे वो यमदूत भगाये ।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी कहे जोड़ अपने हाथ । मुनि वचन जीव भुलाया नाथ ।
यमदूत जब उसे सताये । देकर नाम हम उसे छुड़ाये ।

Date

पुरुष वचन

~~पुरुष अवतार~~

पुरुष निकट अपने जीव बुलाते | फिर आज्ञा अपनी उसे सुनाते |
कैसे जीव ने पुण्य कमाया | मुक्ति वचन तो तूने भुलाया |
कैसे पहुँचा लोक हमारे | सत्य वचन तो कहो विचारे |

हंस वचन

हंस खड़ा जोड़ अपने हाथ | विनती सुनिये इक मेरी नाथ |
हे साहिब मैं कुछ ना जाना | गुरु वचन को सच्चा माना |
जिस दिन गुरु दिये मुझको नाम | तब मैं जाना पद निर्वान |
साधु गुरु का भेद मिलाया | काम क्रोध सभी भुलाया |
साधु संत और पूजे ज्ञानी | मूला नाम मुझे बताये स्वामी |
~~यमपुरी में छोड़के आया~~ |
यमदूत मुझे घर लेने आये | बहुत दुख वो मुझे दिखाए |

साखी / दोहा :- सतगुरु आ दर्शन दिये, सुनाया सच्चा नाम ||
तब आये हम लोक को, छोड़के यम का धाम ||

चौपाई

जो नहीं नाम मुक्ति का पाता | माला पहन जगत बौराता |
सुने नाम और करे कमाई | त्यागे पाखण्ड और अधमाई |
~~निर्मल काये~~
निर्मल काया बने संसार | जिसपे दया करे करतार |
नाम ~~जपे~~ कबीर जपे बड़भागी | गुरु चरणों का बने अनुरागी |
जिसपे दया जो होय तुम्हारी | उससे दूर रहे यम अत्याचारी |
पुरुष दया जब हमें दिखाते | सत्यलोक में बास कराते |

हंस / दोहा :- पुरुष दया जिसको मिले, बने अटल उसका तन |
बुद्धप द्वीप निवास करे, सजती सेज सुमन ||
हंस वंश शत्र सजता, मिले आनन्द महान ||
~~हंस स्वरूप सूर्य सम~~,
हंस स्वरूप सूर्य सा, करोड़ो चन्द्र समान ||

Date

सोरठा/दोहा :- हंस पाते सुख घना, पाके धाम अमोल ॥
आवागमन भ्रम मैटके, द्वीप ही द्वीप कलोल ॥

ग्रन्थ वीर सिंह बोध समाप्त

vijeta